

# सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-9: क्षेत्रिय संस्कृतियों का निर्माण



## क्षेत्रीय संस्कृति का विकास

भारत प्राचीन काल से ही विविधताओं का देश रहा है। देश के हर क्षेत्र की अपनी अलग भाषा, संस्कृति, परंपरा, खान-पान, पहनावा और नृत्य शैली है। हम पाते हैं कि आज जो क्षेत्रीय विविधताएँ मौजूद हैं, वे अतीत में मौजूद विभिन्न स्थानीय परंपराओं के परस्पर मेल या संलयन का परिणाम हैं।

लोगों का वर्णन करने का एक सबसे सामान्य तरीका है उनकी बोलचाल की भाषा से उन्हें परिभाषित करना। प्रत्येक क्षेत्र की कुछ खास किस्म के भोजन, वस्त्र, काव्य, नृत्य, संगीत और चित्रकला से जोड़ा करते हैं। जिन्हें हम आज क्षेत्रीय संस्कृतियाँ समझते हैं, वे समय के साथ-साथ बदली हैं और आज भी बदल रही हैं। ये विचारों के आदान-प्रदान ने एक दूसरे को संपन्न बनाया है।

## चेरा और मलयालम का विकास

केरल राज्य में, हम भाषा और राज्य के बीच एक गहरा संबंध पाते हैं।

- महोदयापुरम के चेरा साम्राज्य की स्थापना नौवीं शताब्दी में वर्तमान केरल राज्य में हुई थी।
- शासकों ने इस अवधि के दौरान मलयालम भाषा और लिपि की शुरुआत की। यह भारतीय उपमहाद्वीप में आधिकारिक अभिलेखों में क्षेत्रीय भाषा के उपयोग के शुरुआती उदाहरणों में से एक है।
- जहाँ मलयालम का उपयोग आधिकारिक अभिलेखों को बनाए रखने के लिए किया जाता था, वहीं संस्कृत का प्रयोग चेर शासकों द्वारा भी किया जाता था। मलयालम में पहली साहित्यिक कृतियाँ संस्कृत पर आधारित थीं।
- चौदहवीं शताब्दी से संबंधित एक पाठ, लीलातिलकम्, संस्कृत और मलयालम में व्याकरण और कविताओं से संबंधित है।

## जगन्नाथ पंथ

उड़ीसा जैसे कुछ राज्यों में, क्षेत्रीय संस्कृति धार्मिक परंपराओं के इर्द-गिर्द विकसित हुई। उड़ीसा के पुरी में जगन्नाथ (भगवान विष्णु का एक रूप) का पंथ ऐसा ही एक उदाहरण है। बारहवीं शताब्दी में, गंगा वंश के शासक, अनंतवर्मन ने पुरी में पुरुषोत्तम जगन्नाथ के लिए एक मंदिर

बनवाया। बाद में 1230 में, राजा अनंगभीम III ने अपना राज्य जगन्नाथ के देवता को समर्पित कर दिया।



जैसे ही मंदिर को राजाओं से संरक्षण प्राप्त हुआ, यह एक महान तीर्थस्थल बन गया और राज्य के सामाजिक और राजनीतिक मामलों को प्रभावित करना शुरू कर दिया। कई राजनीतिक शक्तियाँ जिन्होंने उड़ीसा पर विजय प्राप्त की जैसे मुगलों, मराठों और अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने मंदिर को नियंत्रित करने का प्रयास किया क्योंकि उन्हें लगा कि इससे उनका शासन लोगों को स्वीकार्य हो जाएगा।

### शासक और धार्मिक परंपराएँ

अन्य क्षेत्रों में क्षेत्रीय संस्कृतियाँ, क्षेत्रीय धार्मिक परंपराओं से विकसित हुई थीं। इस प्रक्रिया का सर्वोत्तम उदाहरण है - पुरी, उड़ीसा में जगन्नाथ का संप्रदाय (जगन्नाथ का अर्थ - दुनिया का मालिक जो विष्णु का पर्यायवाची है) आज तक जगन्नाथ की काष्ठ प्रतिमा, स्थानीय जनजातीय लोगों द्वारा बनाई जाती है जिससे की जगन्नाथ मुलतः एक स्थानीय देवता थे।

जिन्हे आगे चलकर विष्णु का रूप मान लिया गया। बारहवीं शताब्दी में गंग वंश के राजा अनंतवर्मन ने पुरी में पुरुषोत्तम जगन्नाथ के लिए एक मंदिर बनवाने का निश्चय किया। इस मंदिर को तीर्थस्थल यानी तीर्थ यात्रा के केंद्र के रूप में महत्व प्राप्त होता गया, सामाजिक तथा राजनितिक मामलों में भी इसकी सत्ता बढ़ती गई।

### राजपूत

- मध्यकालीन भारत में राजस्थान राज्य पर राजपूतों का शासन था। राजस्थान में राजपूतों के अलावा बहुत से लोग रहते थे लेकिन राजपूतों ने राजस्थान की संस्कृति पर एक अलग छाप छोड़ी।
- आठवीं शताब्दी के बाद से, राजस्थान पर विभिन्न राजपूत परिवारों का शासन था जो अपनी बहादुरी और सम्मान के लिए जाने जाते थे।



- पृथ्वीराज चौहान एक प्रसिद्ध शासक थे जिन्हें उनकी बहादुरी के लिए याद किया जाता है और जिन्होंने हार का सामना करने के बजाय युद्ध के मैदान में मरने का विकल्प चुना।
- हमें राजपूतों के बारे में उन कविताओं और गीतों से भी पता चला है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं।
- ये गीत और कविताएं राजपूतों के विभिन्न गुणों जैसे वीरता, मित्रता, निष्ठा, क्रोध आदि को प्रदर्शित करती हैं।
- इन गीतों और कहानियों में महिलाओं को भी जगह मिली है। कभी-कभी वे शासकों के बीच संघर्ष के कारण के रूप में प्रकट होते हैं। महिलाएं ज्यादातर बहादुर पत्नियों के रूप में दिखाई देती हैं, जो या तो युद्ध के मैदान में अपने पति का साथ देती हैं या सती और जौहर करती हैं।



## कथक की कहानी

- भारत में जहां एक क्षेत्र अपने लोगों की वीरता के लिए जाना जाता है, वहीं देश का दूसरा क्षेत्र अपने नृत्य रूपों में से एक के लिए जाना जाता है। कथक एक ऐसा नृत्य रूप है जो उत्तर भारत के कई हिस्सों से जुड़ा हुआ है।
- मूल रूप से, कथक उत्तर भारत के मंदिरों में कहानी कहने वालों की एक जाति थी जो विभिन्न इशारों और गीतों के साथ अपनी कहानियां सुनाते थे।
- पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के प्रसार के साथ, कथक एक नृत्य रूप में विकसित होने लगा। राधा और कृष्ण की रास लीलाओं को लोक नृत्यों में लागू किया गया जिसमें कथक कथाकारों के हावभाव भी शामिल थे।
- यह मुगलों के अधीन कथक एक विशिष्ट नृत्य रूप में विकसित हुआ क्योंकि यह दरबार या कई शासकों में किया जाता था।
- बाद में यह नृत्य दो परंपराओं या घरानों में विकसित हुआ: एक राजस्थान के राजाओं के दरबार में विकसित हुआ और दूसरा लखनऊ में विकसित हुआ। लखनऊ में, यह अवध के नवाब, नवाब वाजिद अली शाह द्वारा प्रदान किए गए संरक्षण के तहत एक प्रमुख कला के रूप में विकसित हुआ।
- धीरे-धीरे कथक नृत्य के रूप में वर्तमान पंजाब, जम्मू और कश्मीर, मध्य प्रदेश और बिहार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैल गया।
- कथक को एक नृत्य रूप के रूप में पहचाना जाने लगा, जिसमें तेजी से पैर की कला, वेशभूषा की आवश्यकता होती है और यह कथाओं का एक माध्यम है।
- हालांकि अंग्रेज कथक के पक्ष में नहीं थे, फिर भी यह नर्तकियों द्वारा किया जाता रहा। स्वतंत्रता के बाद, इसे भारत में नृत्य के छह 'शास्त्रीय' रूपों में से एक के रूप में मान्यता दी गई थी।



राधा-कृष्ण के पौराणिक के रूप में आख्यान लोक नाट्य प्रस्तुत किए जाते थे, जिन्हे ' रासलीला ' कहा जाता था। इसकी प्रस्तुति में किलष्ट तथा द्रुत पद संचालन, उत्तम वेशभूषा तथा कहानियों के प्रस्तुतिकरण एवं अभिनय पर जोर दिया जाने लगा। तमिलनाडु – भरतनाट्यम, केरल – कथाकली, उड़ीसा – ओडिसी, आंध्र प्रदेश – कुचिपुड़ी

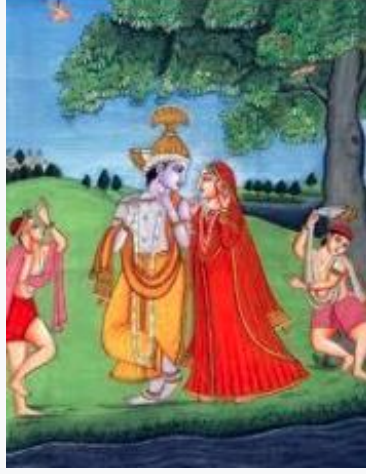
### लघु चित्रकारी

- लघु चित्रकला चित्रकला के सबसे प्रसिद्ध रूपों में से एक रही है जो प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में विकसित हुई थी।
- लघुचित्र छोटे आकार के चित्र होते हैं जो आम तौर पर पानी के रंगों की मदद से कपड़े या कागज के टुकड़े पर बनाए जाते हैं। प्राचीनतम लघु चित्र ताड़ के पत्तों या लकड़ी पर बनाए गए थे।
- अकबर, जहांगीर और शाहजहाँ जैसे मुगल बादशाहों ने अत्यधिक कुशल चित्रकारों को संरक्षण दिया जिन्होंने युद्ध के दृश्यों, दरबार के दृश्यों, राजाओं के शिकार के दृश्यों आदि को चित्रित किया।



- इन चित्रों को केवल राजा, कुलीन और कुलीन परिवार ही देखते थे।
- जैसे-जैसे मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हुआ, कई चित्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चले गए। इसने अन्य क्षेत्रों जैसे दक्कन और राजस्थान में भी चित्रों को प्रभावित किया।
- बाद में इन दरबारों में राजाओं के चित्र और दरबार के दृश्यों को चित्रित किया गया। विशेष रूप से बूंदी, कोटा मेवाड़, जोधपुर और किशनगढ़ जैसे केंद्रों में धर्म और पौराणिक कथाओं पर आधारित विषयों पर कई पेंटिंग भी बनाई गई थीं।
- वर्तमान हिमाचल प्रदेश राज्य में हिमालय पर्वत की तलहटी में लघु चित्रों का और विकास हुआ। सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक, इस क्षेत्र में बसोहली नामक लघु चित्रकला की एक साहसिक और गहन शैली विकसित हुई।
- भानुदत्त का 'रसमंजरी' एक लोकप्रिय पाठ था जिसे इस समय चित्रित किया गया था।
- 1739 में, जब नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया, तो कई मुगल कलाकार पहाड़ी क्षेत्रों में भाग गए।

इन क्षेत्रों के राजाओं ने उन्हें संरक्षण प्रदान किया और इसलिए कांगड़ा चित्रकला शैली विकसित हुई।



- वैष्णव परंपराओं ने कांगड़ा चित्रकला शैली को प्रेरित किया। नरम रंगों का उपयोग जैसे सुखदायक नीले और हरे रंग और विषयों का एक गीतात्मक उपचार इस चित्रकला के स्कूल की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं। इनमें से सर्वाधिक सुंदर चित्र, जो पश्चिम भारत में पाए गए जैन ग्रंथों को सचित्र बनाने के लिए प्रयोग किए गए थे।

ये पांडुलिपियाँ आमतौर पर चटक रंगों में चित्रित की जाती थीं और उनमें के दृश्य, लड़ाई तथा शिकार के दृश्य और सामाजिक जीवन के अन्य पहलू चित्रित किए जाते थे। अक्सर उपहार के तौर पर चित्रों का आदान-प्रदान किया जाता था। स्मरण रहे की साधारण स्त्री-पुरुष भी बर्तनो, दीवारों, कपड़ों, फर्श आदि पर अपनी कलाकृतियाँ चित्रित करते थे।

## बंगाल पर एक नजर

### बंगाली भाषा का विकास

बंगाल राज्य देश के पूर्वी भाग में स्थित है। कई शताब्दियों से, बंगाली बंगाल की क्षेत्रीय भाषा रही है। प्रारंभिक संस्कृत ग्रंथों से पता चलता है कि बंगाल के लोग संस्कृत भाषा नहीं बोलते थे, लेकिन बंगाली, जो संस्कृत से ली गई भाषा है। इस प्रकार यह प्रश्न उठता है कि इस क्षेत्र में बंगाली का उदय कब हुआ?

निम्नलिखित बिंदु हमें उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देते हैं:

- ईसा पूर्व चौथी और तीसरी शताब्दी के बाद से, हम बंगाल और मगध के बीच वाणिज्यिक संबंधों के उद्भव को पाते हैं जिसके कारण बंगाल में संस्कृत का प्रभाव बढ़ सकता है।



- इसके अलावा, गुप्त शासकों ने उत्तर बंगाल पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और कई ब्राह्मण समुदाय इस क्षेत्र में बसने लगे। इसलिए, बंगाल में बोली जाने वाली संस्कृति और भाषाएं सांस्कृतिक भाषाओं और परंपराओं से प्रभावित होने लगीं।
- 1586 में, अकबर ने बंगाल पर विजय प्राप्त की। फारसी प्रशासन की भाषा बन गई, बंगाली एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में विकसित हुई और संस्कृत से प्रभावित हुई।
- हालांकि बंगाली भाषा संस्कृत से ली गई है, यह कई भाषाओं से भी प्रभावित हुई है क्योंकि कई गैर-संस्कृत शब्द अन्य भाषाओं जैसे फारसी, यूरोपीय भाषाओं और आदिवासी बोलियों से प्राप्त हुए हैं।

### प्रारंभिक बंगाली साहित्य का विभाजन

प्रारंभिक बंगाली साहित्य को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- संस्कृत से प्रभावित और दूसरा संस्कृत से स्वतंत्र। पूर्व श्रेणी में संस्कृत महाकाव्यों जैसे मंगलकाव्य (स्थानीय देवताओं से संबंधित धार्मिक कविताएं) और भक्ति साहित्य के अनुवाद शामिल हैं। इन ग्रंथों को तारीख करना आसान है क्योंकि कई पांडुलिपियों से संकेत मिलता है कि ये पंद्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के बीच बनाये गये थे।

साहित्य की दूसरी श्रेणी जो संस्कृत भाषा से स्वतंत्र रही है, उसमें मयनामती और गोपीचंद्र के गीत, धर्म ठाकुर की कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, लोक कथाएँ और गाथागीत जैसे साहित्य शामिल हैं। इन साहित्य को पीढ़ियों से मौखिक रूप से पारित किया गया था और इसलिए इसे ठीक से दिनांकित नहीं किया जा सकता है। वे पूर्वी बंगाल में अधिक लोकप्रिय थे जहाँ ब्राह्मणों का लोगों और संस्कृति पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं था।

### पीर और मंदिर

सोलहवीं शताब्दी से लोगों ने बड़ी संख्या में पश्चिम बंगाल के कम उपजाऊ क्षेत्रों को छोड़कर दक्षिण-पूर्वी बंगाल के जंगली तथा दलदली इलाकों में प्रवास करना शुरू कर दिया था। प्रारंभ में बाहर से आकर यहाँ बसने वाले लोग इस अस्थिर परिसिथतियों में रहने के लिए कुछ व्यवस्था तथा आश्वासन चाहते थे।

ये सुख-सुविधाएँ तथा आश्वासन उन्हें समुदाय के नेताओं ने प्रदान की। ये नेता शिक्षकों और निर्णायकों की भूमिकाएँ भी अदा करते थे। कभी-कभी ऐसा समझा जाता था, की इन नेताओं के

पास अलौकिक शक्तियाँ हैं। स्नेह और आदर से लोग इन्हें ' पीर ' कहा करते थे। इस पीर श्रेणी में संत या सूफी और धार्मिक महानुभाव , पीरों की पूजा पद्धति बहुत लोकप्रिय हो गयी तब बंगाल में पंद्रहवीं शताब्दी के बाद वाले वर्षों में मंदिर बनाने का दौर जोरों पर रहा और उनकी प्रतिमाएँ मंदिरों में स्थापित की जाने लगीं।

### मछली, भोजन के रूप में

परंपरागत भोजन संबंधी आदतें, आमतौर पर स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों पर निर्भर करती हैं। बंगाल एक नदीय मैदान है, जहाँ मछली और धान की उपज बहुतायत से होती है। इसलिए यह स्वाभाविक है की इन दोनों वस्तुओं को गरीब बंगालियों की भोजन-सूची में भी प्रमुख स्थान प्राप्त है।

SHIVOM CLASSES  
8696608541

## NCERT SOLUTIONS

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 136)

प्रश्न 1 निम्नलिखित के मेल बिठाये :-

- |               |         |
|---------------|---------|
| 1. अनंतवर्मन  | केरल    |
| 2. जगन्नाथ    | बंगाल   |
| 3. महोदयपुरम  | उड़ीसा  |
| 4. लीला तिलकम | कांगड़ा |
| 5. मंगलकाव्य  | पुरी    |
| 6. लघुचित्र   | केरल    |

उत्तर -

- |               |         |
|---------------|---------|
| 1. अनंतवर्मन  | उड़ीसा  |
| 2. जगन्नाथ    | पुरी    |
| 3. महोदयपुरम  | केरल    |
| 4. लीला तिलकम | केरल    |
| 5. मंगलकाव्य  | कांगड़ा |
| 6. लघु चित्र  | बंगाल   |

प्रश्न 2 मणिप्रवालम् क्या है ? इस भाषा में लिखी पुस्तक का नाम बताएँ।

उत्तर - मणिप्रवालम का शाब्दिक अर्थ है - हीरा और मूंगा, जो यहाँ दो भाषाओं-संस्कृत तथा क्षेत्रीय के साथ-साथ प्रयोग की ओर संकेत करता है। यह एक भाषा शैली है। चौदहवीं शताब्दी में इस भाषा में एक पुस्तक लिखी गई थी जिसका नाम लीला तिलकम है, जो व्याकरण तथा काव्यशास्त्र विषयक है। 'मणिप्रवालम' शैली में लिखा गया था।

प्रश्न 3 कथक के प्रमुख संरक्षक कौन थे ?

उत्तर - 'कथक' शब्द 'कथा' शब्द से निकला है जिसका प्रयोग संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में कहानी के लिए किया जाता है। कथक मूल रूप से मंदिरों में कथा यानी कहानी सुनाने वालों की एक जाति थी। आगे चलकर यह दो परंपराओं अर्थात् 'घरानों' में फूला - फला: राजस्थान (जयपुर) के राजदरबारों में और लखनऊ में। अवध के आँतम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला - रूप में उभरा। इसलिए कथक के प्रमुख संरक्षण नवाब वाजिद अली शाह थे।

प्रश्न 4 बंगाल के मंदिरों की स्थापत्यकला के महत्वपूर्ण लक्षण क्या हैं ?

उत्तर - जब स्थानीय देवी - देवता, जो पहले गाँवों में छप्पर वाली झोपड़ियों में पूजे जाते थे, उनको ब्राह्मणों द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई तो उनकी प्रतिमाएँ मंदिरों में स्थापित की जाने लगीं। इन मंदिरों की शकल या आकृति बंगाल की छप्पर दार झोपड़ियों की तरह 'दोचाला' (दो छतों वाली) या 'चौचाला' (चार छतों वाली) होती थी। इसके कारण मंदिरों की स्थापत्य कला में विशिष्ट बंगाली शैली का प्रारंभ हुआ। अपेक्षाकृत अधिक जटिल चौचाला यानी चार छतों वाली. ढाँचे में चार त्रिकोणीय छतें चार दीवारों पर रखी जाती थी। मंदिर आमतौर पर एक वर्गाकार चबूतरे पर बनाए जाते थे।

### प्रश्न (पृष्ठ संख्या 137)

प्रश्न 5 चारण-भाटों ने शूरवीरों की उपलब्धियों की उद्घोषणा क्यों की ?

उत्तर - राजपूत शूरवीरों की कहानियाँ काव्यों एवं गीतों में सुरक्षित हैं। ये विशेष रूप से प्रशिक्षित चरण - भाटों द्वारा गाई जाती हैं। ये काव्य एवं गीत ऐसे शूरवीरों की स्मृति को सुरक्षित रखते थे और उनसे यह आशा की जाती थी कि वे अन्य जनों को भी उन शूरवीरों का अनुकरण करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करेंगे। साधारण जन भी इन कहानियों से आकर्षित होते थे। इन कहानियों में अक्सर नाटकीय स्थितियों और स्वामिभक्ति, मित्रता, प्रेम, शौर्य, क्रोध आदि प्रबल संवेगों के चित्रण होते थे। चारण भाट ऐसा इसलिए भी करते थे ताकि उनके उदाहरणों को भी प्रेरित किया जा सके।

प्रश्न 6 हम जनसाधारण की तुलना में शासकों के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के बारे में बहुत अधिक क्यों जानते हैं ?

उत्तर - शासक अभिलेखों तथा अन्य ऐतिहासिक लेखनों द्वारा अपने कार्यों को सुरक्षित रखते थे। इससे शासकों द्वारा पाई गई उपलब्धियाँ लोगों तक पहुँचती रहती थीं। शासकों द्वारा निर्मित कराये गये धार्मिक स्मारकों से हमें उनके सांस्कृतिक रीति-रिवाजों की जानकारी मिलती है। शासकों की सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में यात्रा-वृत्तांतों उत्तर तथा कई रचनाकारों द्वारा भी वर्णन किया गया है।

प्रश्न 7 विजेताओं ने पुरी स्थित जगन्नाथ के मंदिर पर नियंत्रण प्राप्त करने के प्रयत्न क्यों किए ?

उत्तर - ज्यों-ज्यों इस मंदिर को तीर्थ स्थल यानी तीर्थ यात्रा के केंद्र के रूप में महत्त्व प्राप्त होता गया, सामाजिक तथा राजनीतिक मामलों में भी इसकी सत्ता बढ़ती गई। जिन्होंने भी उड़ीसा को जीता जैसे:- मुग़ल, मराठे और अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी, सबने इस मंदिर पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न किया। वे सब यह महसूस करते थे कि मंदिर पर नियंत्रण प्राप्त करने से स्थानीय जनता में उनका शासन स्वीकार्य हो जाएगा।

प्रश्न 8 बंगाल में मंदिर क्यों बनाए गए ?

उत्तर - बंगाल में पंद्रहवीं शताब्दी के बाद वाले वर्षों में मंदिर बनाने का दौर रहा, जो उन्नीसवीं शताब्दी में आकर समाप्त हो गया। मंदिर और अन्य धार्मिक भवन अक्सर उन व्यक्तियों या समूहों द्वारा बनाए जाते थे जो शक्तिशाली बन रहे थे। इनके माध्यम से अपनी शक्ति तथा भक्तिभाव का प्रदर्शन करना चाहते थे। बंगाल में साधारण ईंटों और मिट्टी-गारे से अनेक मंदिर 'निम्न' सामाजिक समूहों जैसे कालू (तेली), कसारी (घंटा धातु के कारीगर) आदि के समर्थन से बने थे। बंगाल में जैसे-जैसे लोगों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार आया उन्होंने इन मंदिर स्मारकों के निर्माण के माध्यम से अपनी प्रसिद्धि की घोषणा की।